कक्षा Xii अर्थशास्त्र

उत्पादन लागतें–

अभिप्राय– प्रत्येक फर्म या उत्पादक को उत्पादन करने के लिए विभिन्न उत्पत्ति के साधनों का एकत्रित करना पड़ता है। उत्पादन के साधनों का प्रयो करने के लिये जो धनराशि व्यय करनी पड़ती है उसे उत्पादन लागत कहते हैं। उत्पादन लागत मुख्य रूप से उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है।

उत्पादन लागत का वर्गीकरण–

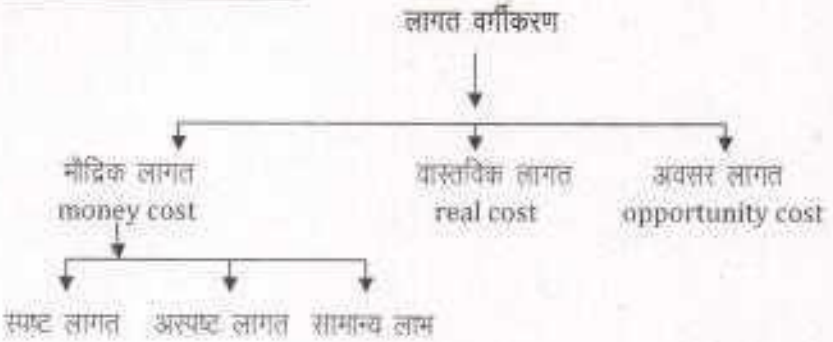

मौद्रिक लागत– किसी फर्म द्वारा एक वस्तु के उत्पादन में किये गये कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा लागत कहते है।

मौद्रिक लागत में सम्मिलित मदें।

1. कच्चे माल पर व्यय।
2. श्रम की मजदूरी एवं वेतन ।
3. अविभाज्य बड़े उपकरण एवं मशीन पर व्यय।
4. पूँजी पर दिया जाने वाला ब्याज।
5. भूमि का किराया अर्थात लगान।
6. मशीनों की टूट– फूट व घिसावट।
7. प्रबन्ध व्यय।
8. विज्ञापन व्यय।
9. यातायात व्यय।
10. बीमा कम्पनीयों को दी जाने वाली धनराशि।
11. सामान्य लाभ।
12. ईंधन व्यय।

स्पष्ट लागतें– एक उत्पादक उत्पत्ति साधनों की सेवाओं की सेवाओं को खरीदने या किराये पर लेने के लिये जो व्यय करता है उसे स्पष्ट लागत कहते है।

स्पष्ट लागतों में सम्मिलित मदें–

1. कच्चे मालों पर व्यय।
2. श्रमिक की मजदूरी।
3. उधार ली गयी पूँजी पर व्यय।
4. भूमि या बिल्डिंग का किराया।
5. उपकरणों की टूट–फूट।
6. विज्ञापन व्यय।
7. बीमा व्यय।
8. कर आदि भुगतान में व्यय।

श्रीमती दीना उप्रेती प्रवक्ता अर्थशास्त्र

अस्पष्ट लागतें– अस्पष्ट लागत में उन सेवाओं एवं साधनों की कीमत को सम्मिलित किया जाता है जिनका उत्पादक प्रयोग तो करता है परन्तु प्रत्यक्ष रूप से कीमत नहीं चुकाता है। उदाहरण के लिये एक उद्यमी स्वयं की सेवा अस्पष्ट लागत का भाग है। क्योंकि उद्यमी स्वयं को कोई स्पष्ट या अस्पष्ट भुगतान नही देता।

स्पष्ट लागतों में सम्मिलित मदें–

1. स्वयं उत्पादक द्वारा प्रदान की गयी सेवा की मजदूरी।
2. उत्पादक की अपनी स्वयं की पूंजी का ब्याज।
3. उस बिल्डिंग का किराया जो स्वयं उत्पादक की है जो उत्पादन में प्रयोग की जा रही है।
4. प्रबन्ध एवं संगठन पर प्रदान की जाने वाली सेवाओं के ऊपर प्राप्त होने वाला सामान्य लाभ।

सामान्य लाभ– उत्पादक को उत्पादन में बनाये रखने के लिये जिस न्यूनतम लाभ की आवश्यकता होती है वह न्यूनतम लाभ सामान्य लाभ कहलाता है।

वास्तविक लागत– किसी उत्पादन प्रक्रिया के अन्तर्गत होने वाले कष्ट एवं त्याग वास्तविक लागत उत्पन्न करते है। वास्तविक लागत को सामाजिक लागत भी कहा जा सकता है, क्योंकि समाज को वस्तुओं के उत्पादन में कष्ट का सामना करना पड़ता है।

अवसर लागत (Opportunity cost)– किसी वस्तु X की अवसर लागत दूसरी वस्तु Y की वह कीमत है जिसका X वस्तु का उत्पादन करने के लिये त्याग करना पड़ता है। उदाहरण के लिए यदि किसी साधन विशेष की एक निश्चित मात्रा को दो प्रयोगों गेहूँ उत्पादन अथवा मशीन उत्पादन में लगाया जा सकता है और यदि एक समान साधनों से रू 5 लाख मूल्य का गेहूँ अथवा रू 4 लाख मूल्य की मशीनें उत्पादित की जा सकती है तो साधनों की बेहतर प्रतिफल की दृष्टि से साधनों को गेहूँ के उत्पादन में लगाया जायेगा। इस प्रकार परित्याग की गई मशीनों का मूल्य उत्पादित किये गये गेहूँ के मूल्य की अवसर लागत कहलायेगी।

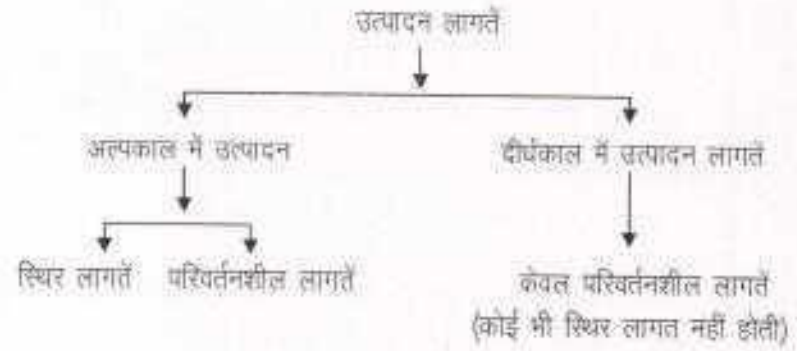

1. **स्थिर लागतें**– स्थिर लागतें इस कुल खर्च का जोड़ है जो उत्पादन के स्थिर साधनों की सेवाओं को खरीदने या भाड़े पर लेने के लिए खर्च करना पड़ता है।

2. **परिवर्तनशील लागतें**– परिवर्तनशील लागतें वह लागत है जो उत्पादन को उत्पादन के घटते–बढ़ते साधन के प्रयोग के लिए खर्च करना पड़ता है।

श्रीमती दीना उप्रेती प्रवक्ता अर्थशास्त्र

कुल लागत– किसी वस्तु की एक निश्चित मात्रा का उत्पादन करने के लिए उत्पादक को जितने कुल व्यय करने पड़ते हैं उनके जोड़ को कुल लागत कहते है।

कुल उत्पादन लागत = कुल स्थिर लागत + कुल परिवर्तशील लागत

TC = TFC + TVC

(Total Cost) (Total fixed Cost) (Total Variable Cost)

कुल स्थिर लागत TFC- स्थिर लागत में उत्पादन को कोई प्रभाव नही पड़ता है। उत्पादन शून्य होने पर भी उत्पादक को स्थिर लागतो का भुगतान करना ही पड़ता है। निम्न चित्र में OK स्थिर लागत पर उत्पादन OQ है तथा OQ_1 उत्पादन होने पर भी स्थिर लागत K ही है

अल्पकाल में कुल स्थिर लागत रेखा X– अक्ष के समान्तर होती है।

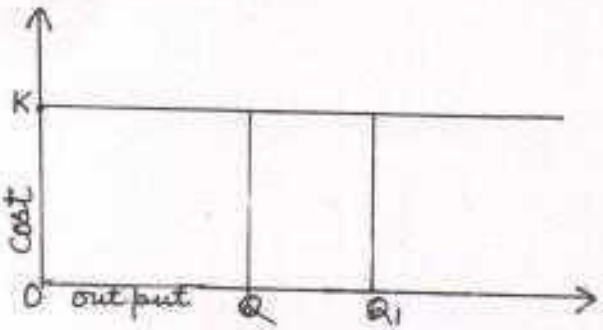

<u>कुल परिवर्तनशील लागत (TVC)</u>

परिवर्तनशील लागत उत्पादन की मात्रा पर निर्भर करती है जैसे–जैसे उत्पादन के आकार मे वृद्धि होती है, वैसे–वैसे परिवर्तनशील लागतो में भी वृद्धि होती जाती है।

निम्न चित्र में TVC रेखा प्रदर्शित की गई है। शून्य उत्पादन स्तर पर परिवर्तनशील लागत शून्य होती है यही कारण है कि TVC रेखा का आरम्भिक बिन्दु मुलबिन्दु O है। चित्र में $K_1Q_1, K_2Q_2, K_3Q_3, K_4Q_4, K_5Q_5$ परिवर्तनशील लागते प्रदर्शित की गई है। चित्र से स्पष्ट है कि TVC उत्पादन के आकार के साथ–साथ बढ़ती जाती है।

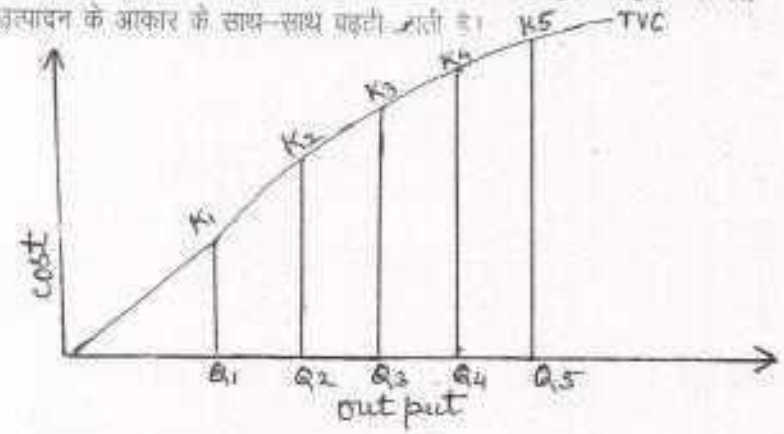

<u>कुल लागत TC-</u>

अल्पकाल में

कुल लागत = कुल स्थिर लागत + कुल परिवर्तनशील लागत

TC = TFC + TVC

निम्न चित्र में TFC एवं TVC रेखाओं को जोड़कर कुल लागत रेखा प्राप्त की गई है। उत्पादन के प्रत्येक स्तर पर यदि TFC और TVC को जोड़ दिया जायें तो हमें TC रेखा प्राप्त होती है। TC रेखा का आरम्भ होता है। क्योंकि शून्य उत्पादन स्तर पर TVC शून्य होने के कारण TC सदैव TFC के बराबर ही होगी। TC और TVC रेखायें परस्पर समान्तर रूप से आगे बढ़ती हैं। क्योंकि TC और TVC का अन्तर TFC है। TFC सदैव स्थिर होता है।

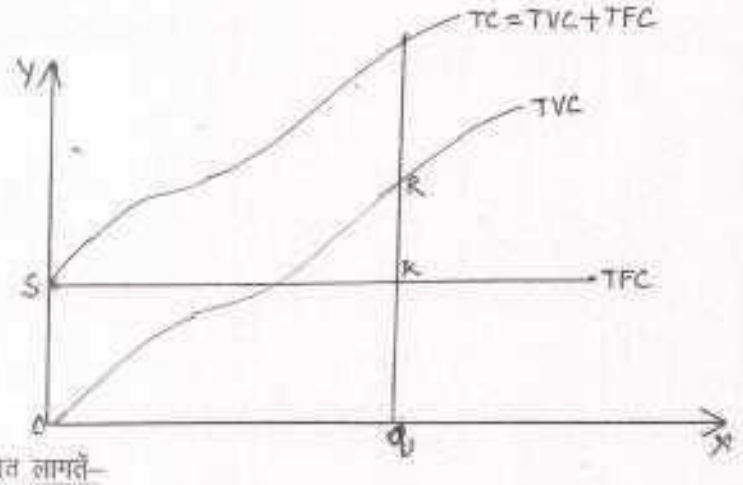

अल्पकालीन औसत लागतें–

औसत लागत AC (Avrrage cost) – औसत लागत कुल लागत एवं उत्पादन मात्रा का भागफल होता है।

$$(AC)\ \text{औसत लागत} = \frac{\text{कुल लागत (TC)}}{\text{उत्पादन मात्रा } q_1}$$

अल्पकाल में TC = TFC+TVC

दोनों पक्षों में q_1 का भाग देने पर

$$TC/q_1 = TFC+TVC/q_1$$
$$TC/q_1 = TFC/q_1+TVC/q_1$$
$$AC = AFC + AVC$$

$AC = TFC/q_1 + TVC/q_1$ कुल स्थिर लागत में उत्पादन इकाईओं का भाग देने पर औसत लागत तथा कुल परिवर्तनशील लागत में उत्पादित इकाई की मात्रा का भाग देने पर औसत स्थिर लागत प्राप्त होती है।

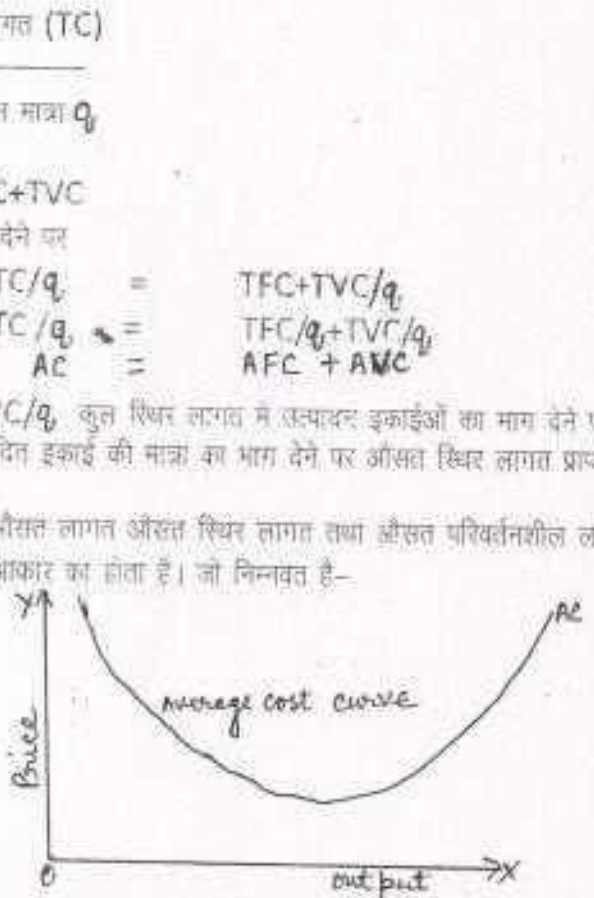

इस प्रकार अल्पकाल में औसत लागत औसत स्थिर लागत तथा औसत परिवर्तनशील लागत का योग होती है। औसत लागत वक्र अंग्रेजी के अक्षर U आकार का होता है। जो निम्नवत है–

<u>अल्पकालीन औसत लागत वक्र का U आकृति होने का कारण–</u> अल्पकाल में परिवर्तनशील अनुपात का नियम लागू होता है। आरम्भ में बढ़ते प्रतिफल के कारण लागत घटती है फिर स्थिर प्रतिफल की दशा में लागत स्थिर रहती है तथा घटते प्रतिफल के कारण लागत बढ़ती है। इसी उत्पादन आकार बढ़ने पर पहले लागत घटती है फिर न्यूनतम होकर स्थिर होती है और अन्त में बढ़ती है इसी क्रम के कारण औसत लागत वक्र U आकृति का होता है।

<u>सीमान्त लागत–</u>

सीमान्त का अभिप्राय है एक अतिरिक्त। एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने से कुल लागत में जितनी वृद्धि होती है उसे उस अतिरिक्त इकाई की सीमान्त लागत कहते है।

यदि n वी इकाई की सीमान्त लागत निकालनी है तब n इकाईयों की कुल लागत में से (N-1) वी इकाई की कुल लागत घटानी पड़ेगी।

अर्थात MCn= TCn-TC(n-1)

MCn= nवी इकाई की सीमान्त लागत

TCn= n इकाइयों की कुल लागत

TC(n-1) = (n-1) इकाईयों की कुल लागत

उदाहरणार्थ यदि 100 इकाईयो के उत्पादन की कुल लागत रू 1.20 है तथा 99 इकाईयों की कुल लागत 9.90 है तब 100 वी इकाई की सीमान्त लागत 1,020– 990= 30 होगी।

सीमान्त लागत और औसत लागत मे सम्बन्ध– सीमान्त लागत और औसत लागत मे निम्न सम्बन्ध है

1. जब सीमान्त लागत औसत लागत से अधिक हो जाती है तो औसत लागत बढ़ जाती है MC>AC तो AC बढ़ेगी।
2. जब सीमन्त लागत औसत लागत औसत लागत के बराबर होती है तो औसत लागत स्थिर रहेगी। अर्थात जब AC= MC तो AC स्थिर रहेगी।
3. जब सीमान्त लागत औसत लागत से कम होती होती है तो औसत लागत कम हो जाती है। अर्थात जब MC<AC तो AC गिरती हुई होगी।

दीर्घकाल मे उत्पादन लागते– दीर्घकाल में उत्पत्ति का कोई साधन स्थिर नही होता बल्कि उत्पादन की लम्बी समय अवधि के कारण उत्पादन के सभी साधन परिवर्तशील बन जाते है।दीर्घकाल मे उत्पादन के आकार को बढाने के लिये उत्पादन के सभी साधनों को आवश्यकतानुसार बढ़ाया जा सकता है अर्थात दीर्घकाल मे उत्पादक अपने प्लाण्ट के आकार में परिवर्तन कर सकता है।

प्रस्तुत कर्ता

श्रीमती दीपा उप्रेती
प्रवक्ता अर्थशास्त्र
आ०वि०गगोत्री गर्ब्याल रा०बा० इ० का०
पिथौरागढ।